महाशिवरात्रि की वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिकता

शिव के साथ जुड़ी हुई "रात्रि" आध्यात्मिक रहस्य की ओर संकेत है। हमारे यहां बच्चे का जन्म अगर रात को भी होता है तब भी हम उसका जन्म दिन मनाते है। यदि किसी महापुरुष का जन्म होता है तो कहते हैं आज उनकी जयन्ती है या किसी देवी-देवता का जन्मोत्सव मनाते है तो कहते हैं अष्टमी, नवमी आदि है। परन्तु शिव के साथ ही रात्रि का त्योहार उस समय से मनाया जाता है जब यह सृष्टि विकारों के वशीभूत होकर अज्ञान-अंधकार में होती है और मनुष्य पतित एवं दुःखी हुए अज्ञान निद्रा में होते हैं। तब पतित पावन परम पिता शिव इस सृष्टि में दिव्य जन्म लेते हैं। इस प्रकार अवतरित होकर ज्ञान सूर्य परमात्मा शिव ज्ञान प्रकाश देते हैं। जो कुछ ही समय में ज्ञान का प्रभाव सारे विश्व में फैल जाता है। कलियुग और तमोगुण के स्थान पर सतोगुण की स्थापना हो जाती है और अज्ञान अन्धकार का तथा विकारों का समूल विनाश हो जाता है। शिव का अर्थ है "कल्याणकारी"। परमात्मा का यह नाम इसलिए है कि वह धर्म ग्लानि के समय, जब सभी मनुष्य आत्माएं माया अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पांच विकार के कारण दुःखी, अशांत। पतित एवं भ्रष्टाचारी बन जाती हैं तब उनको पुनः पावन तथा संपूर्ण बनाने का कल्याणकारी कर्त्तव्य करते हैं। शिव ब्रह्म लोक में निवास करते हैं और वे कर्म भ्रष्ट तथा धर्म भ्रष्ट संसार का उद्धार करने ब्रह्मलोक से नीचे उतर कर एक मनुष्य के शरीर का आधार लेते हैं। परमात्मा शिव के इस अवतरण अथवा दिव्य एवं अलौकिक जन्म की पुनीत स्मृति में ही "शिवरात्रि" का त्योहार मनाया जाता है। परमात्मा शिव किसी माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते क्योंकि वे तो स्वयं ही सबके माता-पिता हैं, मनुष्य सृष्टि के चेतन बीज रूप हैं और जन्म मरण तथा कर्म बंधन से रहित हैं। वे एक साधारण मनुष्य के वृद्धावस्था वाले तन में प्रवेश करते हैं। इसे ही परमात्मा शिव का 9दिव्य जन्म" अथवा अवतरण कहा जाता है। क्योंकि वे जिस तन में प्रवेश करते हैं वह एक जन्म मरण तथा कर्म बन्धन के चक्कर में आने वाली मनुष्यात्मा ही का शरीर होता है। प्रायः सभी धर्मों के लोग कहते हैं कि परमात्मा एक है और सभी का पिता है तथा सभी मनुष्य आपस में भाई-भाई हैं। परन्तु प्रश्न उठता है वह एक पारलौकिक परमपिता कौन है जिसे सभी मानते हैं ? आप देखेंगे कि भले ही हरेक धर्म के स्थापक अलग-अलग हैं परन्तु हरेक धर्म के अनुयायी निराकार, ज्योतिस्वरूप परमात्मा शिव की प्रतिमा (शिवलिंग) को किसी न किसी रूप में मान्यता देते हैं। भारत में परमपिता परमात्मा शिव के ज्योतिस्वरूप शिवलिंग की व्यापक स्तर पर मान्यता दे तो देते ही हैं परन्तु भारत से बाहर भी दूसरे धर्मों के लोग भी इसको मान्यता देते हैं। मुसलमानों के पवित्र स्थल मक्का में भी इसी आकार का पत्थर है जिसे वे बड़े प्यार व सन्मान से चूमते हैं। उसे वे संगे-ए-असवद कहते हैं। परन्तु वे भी इस रहस्य को नहीं जानते हैं कि उनके धर्म में मूर्ति पूजा की मान्यता न होते हुए भी शिवलिंग के आकार वाले पत्थर की स्थापना क्यों की गई है ? ईसाइयों के धर्म स्थापक ईसा मसीह तथा सिक्खों के धर्म स्थापक नानक जी ने भी परमात्मा को एक निराकार ज्योति स्वरूप ही माना है। जापान में बौद्ध धर्म के अनुयाई भी इसी आकार की एक प्रतिमा अपने सामने रखकर उस पर अपना ध्यान एकाग्र करते हैं। यह शिवरात्रि का पर्व सभी मनुष्यात्माओं को सम्मिलित पर्व के रूप में मनाना चाहिए क्योंकि परमात्मा शिव हम सब आत्माओं के पिता हैं। वह जो है, जैसा है, उसे वैसा ही जानकर उनकी याद में रहकर अपने मूल आत्मा स्वरूप को पहचानना और मूल गुण को धारण करना चाहिए। यही इस महा पर्व का संदेश सारे मानव समाज के लिए है जिसे आज की प्रभावी रीति से स्वीकार करना व व्यवहार में लाना हमारे अपने ही हित में है। अतः इस शिवरात्रि पर्व पर हम सभी मनुष्य प्राणी यह दृढ़ संकल्प लें कि हम देहाभिमान त्याग आत्म स्थिति में स्थित होकर व आत्मा के मूल गुणों को धारण कर जीवन के व्यवहार में लायेंगे।

। ओम् शान्ति।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स